प्रेमचंद जिस भाषा को गढ़ते थे, उसी को जीते थे : प्रो. वृषभ प्रसाद जैन

हिंदी विश्वविद्यालय के कोलकाता केंद्र में 'प्रेमचंद को याद करते हुए'

कोलकाता। महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालय वर्धा के क्षेत्रीय केंद्र, कोलकाता में प्रेमचंद के

जंयती समारोह पर ''प्रेमचंद को याद करते हुए'' विषयक कार्यक्रम का आयोजन 'कोलकाता हिंदी

संवाद' की तरफ़ से किया गया। मुख्य वक्ता प्रो. वृषभ प्रसाद जैन ने 'प्रेमचंद: भाषा दृष्टा और विचारक

भी' विषय पर बोलते हुए पर कहा कि भाषा प्रवेश द्वार है जो साहित्य में प्रवेश करने की जिज्ञाषा देती है। प्रेमचंद एकमात्र ऐसे रचनाकार थे, जिनकी रचना पढ़े जाने के बाद हमेशा उसकी याद बनी रहती है।

यहां तक कि उसके पात्र भी याद रहते हैं। प्रेमचंद एक बड़े कथा सृष्टिकर्ता थे। प्रो जैन ने प्रेमचंद के

1930 में बम्बई राष्ट्रभाषा सम्मेलन में भाषा की बारीकियां के बारे में दिए गए भाषण की चर्चा करते हुए बताया कि प्रेमचंद जिस भाषा को गढ़ते थे, उसे जीते भी थे। वे कहते थे कि भाषाएं कभी मरती नहीं हैं। वे एक ऐसे रचनाकार थे, जो हिंदी और उर्दू दोनों में लिखते थे। इससे पूर्वकेंद्र के प्रभारी प्रो.

कृपाशंकर चौबे ने अथितियों का स्वागत करते हुए प्रेमचंद की पत्रकारिता पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि प्रेमचंद ने 'जमाना' में भेजे एक पत्र से पत्रकारिता की शुरुआत की थी। एक पत्रकार के रूप

में प्रेमचंद में वरिष्ठता का कोई गरूर नहीं था। यही कारण था कि प्रेमचंद की कलम ने खासकर देश दुनिया, समाज, साहित्य, सत्ता, स्वाधीनता संग्राम से लेकर स्थानीय निकायों की हालत और जन समस्याओं को भी लोगों के सामने रखा। पीएचडी शोधार्थी अजय कुमार सिंह ने कहा कि किसी भी

रचना के लिए के संवेदना हथियार है और प्रेमचंद ने इसी संवेदनाके आधार पर अनेक रचनाएँ की।

इनके लेखन पर 'मजदूर' पर फिल्म बनी थी, जिसे देखकर इनकी ही 'हंस' पत्रिका में काम कर रहे मजदूरों ने हड़ताल कर दी थी। सहायक प्रोफ़ेसर डॉ. अनिर्बाण घोष ने चीन में प्रेमचंद की लोकप्रियता के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि भारतीय साहित्यकारों में रवींद्रनाथ टैगोर और प्रेमचंद चीन में सबसे लोकप्रिय हैं। इसी क्रम में पीएचडी शोधार्थी संदीप कुमार दुबे ने 'सिनेमा और प्रेमचंद' विषय पर अपना वक्तव्य दिया। उन्होंने बताया कि प्रेमचंद की कहानियों ने फ़िल्मकारों को आकर्षित किया। इनके द्वारा रचित गोदान, गबन, दो बैलों की कथा, शतरंज के खिलाड़ी, बाजार ए हुस्न, गुल्ली डंडा आदि पर फिल्में बनाई गईं। इस अवसर पर एमफ़िल शोधार्थी उमेश शर्मा ने कविता का पाठ किया। इस कार्यक्रम का संचालन 'कोलकाता हिंदी संवाद' के संयोजक और सहायक प्रोफ़ेसर डॉ. सुनील कुमार 'सुमन' ने किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता पूर्व राज्यसभा सदस्य और केंद्र की विजिटिंग फैकल्टी प्रो. चंद्रकला पाण्डेय ने की। इस मौके पर डॉ श्रीरमण मिश्र, संध्या जैन, पूजा शुक्ला, विनोद, सविता, मौसमी, काजल, नेहा, नन्दिनी, पूजा साव, चन्द्र मणि, सद्दाम आदि मौजूद रहे।